CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इमामिया मिशन का प्रकाशन नं० २१३

वि०
१५८

ज्ञान भानु

(इमाम मुहम्मद बाक़िर)

मूल्य चार आना

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इमामिया मिशन लखनऊ

सन् १९३२ ई० में यह धर्म प्रचारिणी सभा स्थापित हुई थी। अपने जन्म काल से यह सभी ऐसे साहित्य को प्रकाशित करती रही है। जो कि इस संसार की वर्तमान परिस्थिति में जब कि माया वादी सिद्धान्तों ने मानवता का विनाश किया है, मानव जाति को ऐसे सात्विक जीवन धर्म एवं कर्त्तव्य का मार्ग दिखलावे जिस पर चल कर अज्ञान रुपी अंधकार में भटकी हुई आत्मा को शान्ति तथा सुख प्राप्त हो सके। हम आशा करते हैं कि आप (पाठक) हमें अपनी सहयोग देकर इस उत्तम तथा पावन सिद्धान्त के प्रसार को सफल बनावें। आप स्वयं ध्यान पूर्वक इस साहित्य का अवलोकन करें तथा खरीद कर दूसरों में बिना मूल्य लिये हुये वितरित करें।

सेवक:—

सै० इब्ने हुसैन नक़वी

आनरेरी सेक्रेटरी

इमामिया मिशन

लखनऊ (भारत)

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

ज्ञान भानु

(इमाम मुहम्मद बाक़िर)

लेखक

मौलाना सैयद अली नक़ी नक़वी मुजतहिद

प्रोफ़ेसर लखनऊ विश्वविद्यालय

अनुवादक

सैयद मुहिब्बुल हसन रिज़वी हल्लौरी

अध्यापक यादगारे हुसैनी हायर सेकंड्री स्कूल,

इलाहाबाद ।

प्रकाशक

सैयद इब्ने हुसैन नक़वी

आनरेरी सेक्रेटरी

इमामिया मिशन

लखनऊ ।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

प्रस्तावना

पवित्र जीवनियों के सिलसिले की यह सातवीं कड़ी आप की सेवा में उपस्थित की जा रही है जो पाँचवें इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम के पवित्र जीवन के सम्बंध में है।

आशा है कि धर्मी भाई इस पुस्तिका की अधिक से अधिक संख्यायें खरीद कर वितरित करेंगे

भवदीयः—

सैयद इब्ने हुसैन नक़वी

आनरेरी सेक्रेटरी

इमामिया मिशन

Channel eGangotri Urdu लखनऊ (भारत)

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

ज्ञान भानु

(इमाम मुहम्मद बाक़िर)

इमाम का अर्थ है नेता। और सच्चा नेता वही हो सकता है जिसके पीछे चल कर मनुष्य मुक्ति का हक़दार बन सके। और मुक्ति का भागी वही बन सकता है जो ऐसे मनुष्य का अनुकरण करे जो स्वयं जीवन के सभी क्षेत्रों में ऊंचाई के शिखर पर पहुँचा हुआ हो जिसे करतार ने मनुष्यों की भलाई के लिये पसन्द किया हो। हज़रत मुहम्मद रसूलिल्लाह के पाक घराने की विशेषता यह थी कि इस घर में पैग़म्बर के बाद लगातार बारह व्यक्ति ऐसे हुए जो मानवता में पूर्ण तथा निपुण थीं। मानवी गुणों का आदर्श इन में की प्रत्येक व्यक्ति था। प्रत्येक ख़ल्क़े ख़ुदा के पथपदर्शन तथा नेत्रित्व के पद पर अल्लाह की ओर से पहुँचा हुआ था। यह बारह इमाम हैं जिन में से पांचवें के जीवन चरित्र का संक्षिप्त वर्णन यहां करना है।

नाम एवं बंशज

पांचवे इमाम का नाम अपने पुरखे हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैह व आलेही वसल्लम के नाम पर मुहम्मद था और बाक़िर पदवी। इसी कारण से आप इमाम मुहम्मदे बाक़िर के नाम से प्रसिद्ध हुए। बारह इमामों में से यह विशेषता आप ही को प्राप्त थी कि आप का बंशज मां और बाप दोनों की ओर से रसूलिल्लाह तक पहुँचता है। पिता

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इमाम ज़ैनुलआबिदीन चौथे इमाम थे जिनके जीवन का हाल इस से पूर्व वाली पत्रिका में लिखा जा चुका है और यह बताया जा चुका है कि इमाम ज़ैनुलआबिदीन पुत्र थे सय्यदुश्शुहदा हज़रत इमाम हुसैन के जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (अ० स० भ०) के छोटे नाती थे। और इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) की माता उम्मे अब्दुल्लाह फ़ातिमा हज़रत इमाम हसन (अ० स० भ०) की सुपुत्री थीं जो हज़रत रसूले ख़ुदा के बड़े नाती थे। इस प्रकार हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) रसूल के उच्च गुणों और अली व फ़ात्मा के वंश की पवित्र विशेषताओं के माता और पिता दोनों की ओर से उत्तरोधिकारी हुए।

जन्म

आप का जन्म शुक्रवार के दिन पहली रजब सन् ५७ हिजरी में हुआ यह वह समय था जब इमाम हसन (अ० स० भ०) की मृत्यु को सात वर्ष बीत चुके थे और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम मदीने में शांत जीवन व्यतीत कर रहे थे और समय की चाल तेज़ी के साथ कर्बला की घटना के कारण इकट्ठा कर रही थी। समय मुहम्मद साहब के घराने वालों तथा उन के शीयों के प्रतिकूल था। अली (अ० स० भ०) के मानने वाले चुन चुन कर क़त्ल किए जा रहे थे। उस समय इस बालक का जन्म मानों कर्बला के जिहाद में सम्मिलत होने के लिये था।

कर्बला की घटना

तीन वर्ष तक हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ०स०भ०)

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इमाम हुसैन के हाथों परवान चढ़ रहे थे जब आप पूरे तीन वर्षों के हो गये तो इमाम हुसैन (अ० स० भ०) ने मदीने से यात्रा की। इस बाल्य जीवन में इमाम मुहम्मद बाक़िर भी अपने दादा के साथ यात्रा की कठिनाइयों का सहन करते रहे। इमाम हुसैन ने मक्के में शरण लिया फिर कूफ़े की यात्रा की और फिर कर्बला पहुँचे। सातवीं मुहर्रम से जब पानी बन्द हो गया तो अवश्य मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) ने भी तीन दिन प्यास की तकलीफ़ उठाई। यह केवल अल्लाह के न चाहने के कारण कर्बला में उन की क़ुरबानी नहीं हुई अल्लाह ने उन्हें जीवित ही रखना उचित समझा वरन् अली असग़र छः महीने का बच्चा तीर से कर्बला में शहीद हो गया किन्तु मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) को मैदान में शहादत के लिये नहीं लाया गया क्योंकि इमामत्व का सिलसिला संसार में (अल्लाह को) क़ायम करना था। और अल्लाह की मर्ज़ी यही हुई कि वह कर्बला के जिहाद में उसी प्रकार शरीक हुए जैसे उन के बीमार पिता हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन शरीक रहे। आशूर के दिन (दसवीं मुहर्रम को) दिन भर रिश्तेदारों की लाशों का ख़ैमों में दिन भर आना, बीबियों में रुदन होना बच्चों में विलाप का होना, अली असग़र का तीर से मारा जाना इमाम हुसैन का बिदा लेने के बाद युद्धस्थल से न लौटना इमाम के घोड़े का ख़ाली ज़ीन ले कर ख़ैमे के द्वार पर आना और फिर पवित्र एवं पावन ख़ैमों में हाहाकार मचना यह सभी दृश्य मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) अपने नेत्रों द्वारा देख रहे थे। ख़ैमों में आग का लगना। सामान की लूट बीबियों के सिरों से चादरों का छिनना आग की लपेटों के बीच से बच्चों का घबराहट में भागना। ऐसे कुसमय में मुहम्मद बाक़िर

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

(अ० स० भ०) के कोमल हृदय पर क्या बीत गई और इस भयानक दृश्य ने उन के हृदय पर क्या छाप छोड़ी इस का अनुभव किसी दूसरे मनुष्य को नहीं हो सकता।

ग्यारह मुहर्रम के बाद मां फुफी, दादी, नानी सब को शत्रु की क़ैद में बन्दी देखा। यदि सकीना के बाहुओं में रस्सी बांधी गई तो मुहम्मद बाक़िर के गले में भी अत्याचार की रस्सी डाली गई होगी। करबला से कूफ़ा, कूफ़ा से शाम और फिर रिहाई के पश्चात मदीने की वापसी। इन मन्जिलों पर न जाने कितने दुःख जो मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) के नन्हे हृदय को सहन करना पड़े और ग़म के कितने छाप ऐसे हृदय पर बैठे कि समस्त जीवन में क़ायम रहे।

पालन पोषण

कर्बला की घटना के पश्चात इमाम ज़ैनुलआबिदीन का जीवन संसार की उलझनों से अलग थलग शांत तथा ख़ामोशी का था। संसार से मेल जोल या नाता बिल्कुल छोड़ दिया था कभी पूजा (इबादत) और कभी पिता का शोक मनाना और उनका मातम। केवल उन दो कार्यों में ही उनका समय व्यतीत होता था। यही समय वह था कि ऐसे वातावरण में इमाम मुहम्मद बाक़िर बढ़े पले। सन् ६१ हिजरी से सन् ९५ हिजरी तक ३४ वर्ष अपने पवित्र पिता के जीवन चरित्र का अध्ययन करते रहे और अपने पिता के जीवन के आइने में सदा नज़र करते रहे।

बाप की मृत्यु और इमामत्व का भार

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

हजरत इमाम मुहम्मद बाक़िर भरपूर जवानी की मंज़िलों को तै करते हुए एक साथ शारीरिक तथा अध्यात्मिक कमालों के सब से ऊँचे शिखर पर पहुँचे हुए थे और जब आप की आयु ३८ वर्ष की थी तो आप के पिता इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ० स० भ०) की मृत्यु हूई हजरत ने अपने मरने के समय एक सन्दूक़ को जिसमें अहले बैत (गृहवालों) के विशेष ज्ञान की पुस्तकें थीं इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ०स०भ०) को दिया इस के अतिरिक्त अपने और बच्चों को एकत्रित करके सबका भार इमाम मुहम्मद बाक़िर को सौंपा। और ज़रूरी वसीयतें की इस के बाद इमामत्व का भार इमाम मुहम्मद बाक़िर पर पड़ा। आप पाँचवें इमाम रसूल के अहलेबैत में से हुए और रसूल के सच्चे जानशीन हुए।

उस काल की विशेषताएं

यह वह समय था जब बनी उमैया की सलतनत अपनी शक्ति के लिहाज से बुढ़ापे की मंज़िलों से गुज़र रही थी। बनी हाशिम पर अत्याचार, विशेष कर कर्बला की घटना ने बड़ी हद तक संसार की आँखें खोल दी थीं और जब यज़ीद स्वयं अपने उस अल्प जीवनकाल में जो कर्बला के बाद हुआ अपने किये पर लज्जित हो चुका था। और उसके बुरे परिणाम को महसूस कर चुका था और उस के बाद उस का पुत्र मुआविया अपने बाप और दादा के चरित्र से अपनी घृणा प्रकट कर के सलतनत छोड़ चुका था तो बाद के बादशाहों को कहां तक उन अत्याचारों के बुरे परिणामों का अन्दाज़ा न होता जब कि उस समय तव्वाबीन संघ का जिहाद, मुख्तार और उन के साथियों का हुसैन के क़ातिलों से बदला लेने की घटना और

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इसी प्रकार की बहुत सी घटनाएँ घटित हो चुकी थीं। जिनसे शाम सरकार की नीव हिल चुकी थी। इस का परिणाम यह था कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) को सरकार के अत्याचार से कुछ आज़ादी प्राप्त हो चुकी थी। आप को संसार के सुधार का कुछ अधिक समय मिल सका था।

इमाम हुसैन के शोक मानाने से लगाव

आप कर्बला की घटना अपनी आँखों से देखे हुए थे फिर अपने पिता के उस जीवन को देख चुके थे जो इमाम हुसैन पर रोने में व्यतीत हुआ था। और यह ध्यान भी आप को पीड़ा पहुँचाता था कि उन के पिता इतना अवसर न पा सके कि दूसरों को इमाम हुसैन (अ० स० भ०) का मातम करने की दावत दे पाते। इस का यह फल था कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) को इस में ख़ास रुचि रही और लगाव के साथ आप मजलिसें करते थे और कुमैतबिन ज़ैद असदी जो उस समय के बड़े कवी थे उन को बुला कर मरसिया पढ़वाते थे और सुनते थे। यही वह प्रारंभ था कि जिस को तत्पश्चात इमाम जाफ़रे सादिक़ और इमाम रिज़ा (अ० स० भ०) के समय में बड़ी उन्नति प्राप्त हुई।

ज्ञान का केन्द्र

नदी का पानी यदि किसी बन्ध के बांध दिए जाने से कुछ दिन रुका रहे फिर किसी कारण से वह बन्ध टूट जाए तो पानी बड़ी तेज़ी से बहा हुआ मालूम पड़ेगा। अहलेबैत के इमामों में से प्रत्येक के सीने में ज्ञान का एक लहराता हुआ समुद्र था परन्तु बहुधा इस समुद्र से प्यासे अपनी प्यास बुझाने

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

का सरकार की ओर से रोक थाम के कारण अवसर न पाते। इमाम मुहम्मद बाक़िर के समय में जब हिंसा का शिकंजा ज़रा ढीला हुआ तो अहलेबैत के ज्ञान का समुद्र पूरी शक्ति के साथ उमड़ा और हज़ारों प्यासों की ज्ञानिक त्रिषण को बुझाता हुआ अल्लाही आदेशों की खेती सींचता हुआ समस्त संसार में फैल गया। इस अनन्तज्ञान के प्रदर्शन के फलःस्वरूप आप की पदवी बाक़िर हूई। इस शब्द के अर्थ हैं आन्तरिक बातों को प्रकट करने वाला, चूँकि आप ने अपने ज्ञान द्वारा बहुत से गुप्त रहस्यों को खोला जो दैविक थे इस लिए सब मुसलमान आप को बाक़िर के नाम से याद करने लगे। आप से अहलेबैत का ज्ञान प्राप्त करने वालों की संख्या सैकड़ों तक पहुँची हूई थी। बहुत से ऐसे व्यक्ति जो धर्म के अनुसार आप से श्रद्धा नहीं रखते थे और जिन्हें सुन्नी समप्रदाय अपने मुहद्दसीन में उच्च स्थान देती है वह भी इमाम मुहम्मद बाक़िर की चौखट पर ज्ञान की प्राप्ति के लिए आते थे जैसे ज़हरी, इमाम ओपेज़ाई, अतः इब्ने जुरैह, क़ाज़ी हिफ़्स इब्ने ग़ियास आदि यह सब इमाम मुहम्मद बाक़िर के शिष्यों में गिने जाते हैं।

अहलेबैत के ज्ञान की शिक्षा का प्रसार

हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर के समय में अहलेबैत के ज्ञान की रक्षा का प्रबंध हुआ और हज़रत के शिष्यों ने उस शिक्षा से जो उन्हें हज़रत से मिली बहुत सी पुस्तकें कला तथा विज्ञान पर लिखीं। नीचे हज़रत के कुछ शिशुओं और उन की रचनाओं का वर्णन किया जाता है जिस से आप को अनुमान होगा कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) द्वारा इस्लामी दुनिया ने ज्ञान तथा धर्म की कितनी उन्नती की।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

(१) अबान इब्ने तग़लिब :—यह इल्मे क़िराअत (क़ुरान-पठन विद्या) तथा लग़त (भाषा) के इमाम माने गये हैं। सब से पहले किताब ग़रीबुलक़ुरआन (क़ुरआन मजीद के कठिन शब्दों की व्याख्या) उन्हों ने ही लिखी थी और १४१ हिजरी में उनकी मृत्युहुई।

(२) अबू जाफ़र मुहम्मद इब्ने हसन इब्ने अबीसारा रुवासी-इल्मे क़िराअत, नह्व (व्याकरण) और तफ़सीर के प्रसिद्ध ज्ञाता थे किताबुलफ़ैसल माफ़िलक़ुरान आदि पांच पुस्तकों को रचनायक हैं। सन् १०१ हिजरी में इनकी मृत्यु हूई।

(३) अब्दुल्लाह इब्ने मैमून असवदुलक़िदाह – इन की रचनाओं में से एक पुस्तक मबअस नबी रसूलिल्लाह के जीवन इतिहास तथा चरित्र पर और एक पुस्तक जन्नत व नार (नर्क) के हाल में लिखी आप की मृत्यु सन् १०५ हिजरी में हूई।

(४) उतैयह इब्ने सईद ने पाँच जिलदों में तफ़सीर क़ुरान लिखी और सन् १११ हिजरी में मृत्यु हुई।

(५) इस्माईल इब्ने अब्दुर्रहमानुस्सुद्दिलकबीर- यह प्रसिद्ध मुफ़स्सिरे कुरान हैं जिन का वर्णन समस्त इस्लामी मुफ़स्सिरीन ने सुद्दी के नाम से किया है इनकी मृत्यु सन् १२७ हिजरी में हुई।

(६) जाबिर बिन यज़ीद जुआफ़ी—इन्हों ने इमाम मुहम्मदे बाक़िर (अ० स० भ०) से पचास हज़ार हदीसें सुन कर याद कीं और एक स्थान पर सत्तर हज़ार की संख्या बताई गई है। इस का वर्णनसिहाहसित्ता में से सहीमसलिम में है तफ़सीर, फ़िक्ह , और हदीस में कई पुस्तकें लिखीं। आप की मृत्यु सन् १२८ हिजरी में हुई।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

(७) अम्मार इब्ने मुआविया दहनी--फ़िक़्ह में एक पुस्तक लिखी। सन् १३३ हिजरी में मरे।

(८) सालिम इब्ने अबी हफ़सा अबू यूनुस कूफ़ी-फ़िक़्ह में एक पुस्तक लिखी। सन् १३७ हिजरी में मृत्यु हुई।

(९) अबदुलमोमिन इब्ने क़ासिम अबू अबदुल्लाह अन्सारी—यह भी फ़िक़्ह में एक पुस्तक के रचयता हैं। सन् १४७ हिजरी में मरे।

(१०) अबू हमज़ा समाली-तफ़सीरे क़ुरान में एक पुस्तक लिखी इसके अतिरिक्त किताबुन्नौ और किताबुज्ज़ुहद भी इन्हीं की रचनाएँ हैं। १५० हिजरी में मृत्यु हूई।

(११) ज़रारह इब्ने आयनः—बड़े ऊंचे विद्वान और शीया बुज़ुर्ग थे। इनकी इल्मेकलाम (धर्म-तर्क) फ़िक़्ह और हदीस में बहुत सी पुस्तकें हैं। सन् १५० हिजरी में आप का देहान्त हुआ।

(१२) मुहम्मद इब्ने मुस्लिम—यह भी उच्च श्रेणी के बुज़ुर्ग थे। इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) से तीस हज़ार हदीसें सुनीं। बहुत सी पुस्तकों के लेखक हैं जिन में से एक पुस्तक चहार सद मसअला दस अबवाब हलाल व हराम भी है। सन १५० हिजरी में आप की मृत्यु हुई।

(१३) यहिया इब्ने क़ासिम अबूबसीर असदीः—श्रेष्ठ योग्य मनुष्य थे मनासिक हज पुस्तक, किताबे यौमे दलीला लिखी सन् १५० हि० में देहान्त हुआ।

(१४) इस्हाक़े क़ुम्मीः—फ़िक्ह में एक पुस्तक के लेखक हैं।

(१५) इस्माईल इब्ने जाबिर खसअमी कूफ़ी ने अहादीस

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

(हदीसों) की कई पुस्तकें लिखीं। एक पुस्तक फ़िक्ह की भी लिखी।

(१६) इस्माईल इब्ने अब्दुलख़ालिक़:—बहुत बड़े फ़िक़्ह के विद्वान थे। उन्हों ने भी एक किताब लिखी थी।

(१७) बरउलअस्काफ़िलअज़दी:—इन्हों ने फ़िक़्ह की एक पुस्तक लिखी।

(१८) हारिस इब्ने मुग़ीरा—यह भी फ़िक़्ह के मसलों की एक पुस्तक के लेखक हैं।

(१९) हुज़ैफ़ा इब्ने मनसूस खुज़ाइ:—इन की भी एक पुस्तक फ़िक़्ह में थी।

(२०) हसन इब्ने सरी ने एक किताब फ़िक़्ह पर लिखी।

(२१) हुसैन इब्ने तौर इब्ने अबीफ़ाख़िता ने किताबुन्नवादिर लिखी।

(२२) हुसैन इब्ने हम्माद अबदी कूफ़ी एक पुस्तक के रचयता थे।

(२३) हुसैन इब्ने मुसअबबजली:—इन की भी एक पुस्तक थी।

(२४) हम्माद इब्ने अबी तलहा ने एक पुस्तक लिखी।

(२५) हमज़ा इब्ने हमरान इब्ने आयन ज़रारह के भतीजे थे और एक पुस्तक के लेखक थे। यह कुछ नाम उन विद्वानों और हदीस ज्ञाताओं की बड़ी संख्या में से यहाँ दिये गए हैं जिन्हों ने इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ. स. भ.) से अहलेबैत के ज्ञान को प्राप्त करके पुस्तकों में सुरक्षित कर दिया है। यह और इस के पश्चात इमाम जाफ़र सादिक़ के इमामत्वकाल में

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

जो पुस्तकें सैकड़ों की संख्या में लिखी गई हैं यही वह पूंजी थी जिसे बाद में काफी, (मन ला यहज़ुर) तहज़ीब तथा इस्तबसार जैसे हदीस शास्त्र के ख़ज़ाने इकट्ठा हो सके और जिन पर शीया मत का गगन चक्कर करता रहा है।

स्वभाव, चरित्र और गुण

आप के ऊंचे स्वभाव को शत्रु भी मानते थे अतएव शाम देश का एक निवासी जो मदीने में रहता था वह बहुधा इमाम मुहम्मद बाक़िर के पास आ कर बैठा करता था और उस का कथन था कि "मुझे इस घर वालों से कोई प्रेम अथवा श्रद्धा कदापि नहीं है किन्तु आप के स्वभाव में वह आकर्षण शक्ति है कि मैं आप के पास आने और बैठने पर मजबूर हूँ"।

शासन प्रबंध के कार्यों में सलाह

इस्लामी राज वास्तव में अहलेबैत की चीज थी किन्तु संसार के मायवादियों ने भौतिक शक्ति के आगे सिर झुकाया और यह पावन व्यक्ति जो अहलेबैत रसूल में थे इन को शाँत तथा एकान्त जीवन व्यतीत करना पड़ा। यह स्पष्ट है कि यदि यह व्यक्ति साधारण मनुष्यों जैसे होते तो यदि राज काज में सलाह की आवश्यकता उन से पड़ती तो साफ़ इन्कार कर देते किन्तु यह लोग मनुष्यत्व के उस ऊंचे शिखर पर थे जहाँ साधारण व्यक्ति नहीं पहुँच पाते। जिस प्रकार हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली इब्ने अबी तालिब ने अपने समय की सरकार की ठीक राय देने से इन्कार नहीं किया उसी प्रकार इस कड़ी के सभी इमामों ने अपने समय के बादशाहों के साथ यही तरीक़ा राय देने का क़ायम रक्खा अतएव इमाम मुहम्मद बाक़िर

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

(अ०स०भ०) के समय में भी यह सूरत पेश आई। बात यह थी कि इसलामी राज्य की ओर से उस समय तक कोई मुख्य सिक्का नहीं बनाया गया था बल्कि रूमी सलतनत के सिक्के इस्लामी मुलकों में भी प्रचलित थे। वलीद इब्ने अब्दुल मलिक के काल में शाम राज्य और रोम राज्य में विरोध उतपन्न हो गया था रोम राज्य ने यह इरादा प्रकट किया कि वह अपने सिक्कों पर पैगमबरे इस्लाम के लिए अपमान जनक शब्द खुदवा देगा इस से मुसलमानों में बड़ी बेचैनी पैदा हो गई। वलीद ने एक बड़ी सभा राय सलाह के लिए बुलाई जिस में इसलामी दुनिया के बड़े बड़े व्यक्ति बुलाए गये। इस सभा में इमाम मुहम्मद बाक़िर भी थे और आप ने यह राय दी कि मुसलमानों को स्वयं अपना सिक्का ढालना चाहिए जिस में एक ओर ला इलाहा इल्लल्लाह और दूसरी ओर मुहम्मदर रसूलिल्लाह खुदा हुआ हो। इमाम की इस राय को सभों ने स्वीकार कर लिया और इस्लामी सिक्का इसी प्रकार तैयार हो गया।

उमवी सरकार की ओर से रोक थाम

हालांकि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) मुलकी मामलों में कोई भाग न लेते थे और यदि कुछ कहा भी तो सरकार के इच्छानुसार इस्लामी यश को क़ायम रखने और बाक़ी रखने के लिये। किन्तु आप का शांत तथा विद्यात्मक जीवन और अध्यात्मिक केन्द्रता भी ततकाल सरकार को खटकती थी अतएव हिशाम इब्ने अब्दुल मलिक ने मदीने के हाकिम को पत्र लिखा कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) को उन के पुत्र हज़रत जाफ़रे सादिक़ के साथ दमिश्क़ भेज दिया जाये वह यह चाहता था कि इस प्रकार आप के यश और आदर को

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

वह धक्का पहुँचा सकेगा। और जब यह लोग दमिश्क़ पहुँचे तो तीन दिन तक हिशाम ने मुलाक़ात का अवसर नहीं दिया चौथे दिन दरबार में बुला भेजा। वह ऐसा समय था कि वह दरबार में राज सिंहासन पर बैठा हुआ था। और दाहने तथा बायँ सेना के लोग हथियार लगाए खड़े थे और दरबार के बीच में एक निशाना तीर फेंकने का मुक़र्रर किया गया था और सलतनत के अमीर उस के सामने शर्त बांध कर तीर लगाते थे। इमाम (अ० स० भ०) के पहुँचने पर उस ने बड़े साहस के साथ इच्छा की कि आप भी इन लोगों के साथ तीर लगाएँ हालांकि हज़रत ने बहुत क्षमा चाही किन्तु उस बादशाह ने नहीं माना वह समझता था कि आले मुहम्मद बहुत दिनों से अलग थलग जीवन व्यतीत कर रहे हैं उन को संग्राम विद्या से क्या लगाव और इस प्रकार वह यह चाहता था कि लोग इन इमामों पर हँसें किन्तु उसे यह पता न था कि इनमें से प्रत्येक के बाहु में अली की शक्ति और हृदय में हुसैन की ताक़त मौजूद है। वह केवल अल्लाह के आदेश तथा कर्तव्य पालन की भावना हैं जिस के कारण यह लोग शांति की मूर्तिं प्रतीत होते हैं। यही हुआ कि जब विवश होकर हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर ने तीर और कमान हाथ में लिया और कुछ तीर बारी बारी से एक ही निशाने एक ही बिन्दु पर लगाए तो सब लोग आश्चर्य में पड़ गए और सब ओर से प्रशंसा होने लगी। हिशाम को अपने इस किए पर लज्जित होना पड़ा। इस के पश्चात हज़रत से इमामत्व और ख़िलाफ़त की समस्या और अहलेबैत के गुणों पर वार्तालाप होने लगा। जिस के बाद उस बादशाह (हिशाम) को यह महसूस हुआ कि ऐसा न हो कि इमाम का दमिश्क़ में रहना साधारण जनता के हृदय में अहलेबैत की श्रेष्ठता स्थापित

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

कर देने का कारण बन जाए। इस लिये उस ने आप को मदीना लौट जाने की आज्ञा दी किन्तु दिल में इमाम से और अधिक जलने लगा।

मृत्यु

ज्यों ज्यों शाम सरकार को इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ० स० भ०) की बड़ाई, श्रेष्ठता, गौरव तथा पवित्रता का अनुमान अधिक होने लगा, आप का जीवन उस की आंखों में खटकने लगा। अन्त में आप को उस शांत शस्त्र अर्थात विष से जो बहुधा शाम सरकार (बनी उमैया) की ओर से काम में लाया जाता रहा था, शहीद करने का उपाय कर लिया गया। वह एक ज़ीन का तुहफ़ा था जिस में विशेष उपाय द्वारा विष छिपा दिया गया था और जब हज़रत उस ज़ीन पर सवार हुए तो विष आप के शरीर में फैल गया कुछ दिन बड़ी बेचैनी के साथ बीमारी के बिछौने पर गुज़रने के पश्चात ७, ज़िलहिज्जा सन् ११४ हि० में ५७ वर्ष की आयु में आप की मृत्यु हुई।

आप की वसीयत के अनुसार आप को तीन कपड़ों का कफ़न दिया गया जिन में से एक वह यमनी चद्दर थी जिसे ओढ़ कर आप जुमा के दिन नमाज़ पढ़ते थे और एक वह कपड़ा था जिसे आप सदा पहने रहते थे और जन्नतुलबक़ी में उसी क़ुब्बे में जहां हज़रत इमाम हसन (अ० स० भ०) और इमाम ज़ैनुलआबिदीन (अ० स० भ०) दफ़न हो चुके थे हज़रत भी दफ़न किये गये।

अ० स० भ० = अल्लाह उन पर सलाम भेजे।

मुद्रक :— डायमन्ड प्रेस, १०३ शाहगंज, इलाहाबाद।
Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इमामिया मिशन लखनऊ

यह मिशन सन् १९३२ ई० में स्थापित हुआ था। यह मिशन वास्तविक इस्लाम के साहित्य का प्रकाशन करता है तथा इस्लाम के अतिरिक्त अन्य धर्मावलम्बियों में बिना मूल्य लिये अपनी पुस्तकों को वितरित करता है। इस मिशन की सहायता सदस्यता पुस्तकों के क्रय एवं अनुदान के द्वारा की जा सकती है।

सदस्यता के शुल्कों की सूची निम्नलिखित है।

१-	विशेष अनुदान देने वालों के लिये	५००)	एक बार में
२-	संरक्षक	१००)	,, ,,
३-	जीवन सदस्य	५०)	,, ,,
४-	विशेष सदस्य	५)	वार्षिक
५-	साधारण सदस्य	१)	,,

टिप्पणी :- १- विशेष अनुदान देने वाले एवं संरक्षक मिशन के नये तथा पुराने प्रकाशन बिना मूल्य लिये प्राप्त कर सकेंगे।

२- जीवन सदस्य अपनी सदस्यता के पश्चात के सभी प्रकाशन बिना मूल्य प्राप्त कर सकेंगे तथा उसके पूर्व के प्रकाशनों को आधे मूल्य पर प्राप्त कर सकते हैं।

३- विशेष सदस्य अपने सदस्य होने के उपरान्त सभी प्रकाशन बिना मूल्य प्राप्त कर सकेंगे।

४- साधारण सदस्य अपनी सदस्यता के पश्चात के प्रकाशनों को आधे मूल्य पर प्राप्त कर सकेंगे।

अवैतनिक सचिव
इमामिया मिशन
नखास, लखनऊ (भारत)

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इस्लाम की शिक्षा के जीते जागते उदाहरण हज़रत मुहम्मद साहब तथा उनकी आदर्शमय जीवन यापन करने वाली सन्तानों की जीवनियाँ।

१—शान्ति सन्देशद
२—स्वर्ग बाला
३—अभ्रान्तात्मा
४—शान्ति-स्रोत
५—अमर सेनानी
६—धैर्य सागर
७—ज्ञान भानु
८—सत्यास्तम्भ
९—संयम शिखर
१०—सर्वमान्य अली
११—धर्मोद्गम
१२—महातपस्वी बन्दी
१३—विजयी कारागृही
१४—अंतिम पथ-प्रदर्शक

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ।) तथा डाक व्यय —)

मिलने का पता:—

आनरेरी सिक्रेटरी
इमामिया मिशन
लखनऊ
(भारत वर्ष)

Channel eGangotri Urdu